

उम्मीद की किरण ... पुणे के इंजीनियरों ने बनाया कृत्रिम हाथ

दुर्घटना या अन्य कारणों से हाथ कटने की समस्या से पीड़ित दिव्यांगों के जीवन में उम्मीद की एक नई किरण जगी है। पुणे के चार इंजीनियरों ने एक ऐसा कृत्रिम हाथ तैयार किया है, जिसे बिना सर्जरी के लगाया जा सकता है। वह मस्तिष्क से प्राप्त संकेतों के आधार पर काम करेगा। इस योजना पर इंजीनियर्स पिछले डेढ़ साल से काम कर रहे थे। स्टार्टअप डीडी लैब की चार सदस्यीय टीम ने मियो इलेक्ट्रिक आर्म विकसित किया है।

यह योजना एक वेंचर के तहत सीएसआईआर नेशनल केमिकल लेबोरेटरी (एनसीएल) की देख-रेख में संचालित हो रही है। कम कीमत वाले इस हाथ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि मस्तिष्क से प्राप्त संकेत को यह हाथ के अंतिम छोर तक स्वाभाविक तौर पर पहुंचाएगा। इसके लिए विशेषज्ञों ने हाथ की मांसपेशियों को बिजली के माध्यम से डिकोड किया है।



इसके लिए सरफेस इलेक्ट्रो मायोग्राफी (ईएमजी) सेंसर से लेकर कई अन्य तरह के परीक्षण भी किए गए हैं। डीडी लैब के को-फाउंडर प्रतीक भालेखव का कहना है कि जब भी दिव्यांग के अवशिष्ट अंग इन संकेतों को उत्पन्न करेंगे, तब-तब ऑनबोर्ड सेंसर उसका पहचान करेगी। उनका कहना है कि फिलहाल बाजार में उपलब्ध कृत्रिम हाथ 35 से 40 लाख रुपए में उपलब्ध हैं। लेकिन इस हाथ की कीमत मात्र एक से डेढ़ लाख रुपए होगी। यह जल्द ही बाजार में उपलब्ध हो जाएगा।

यह पेज आपको कैसा लगा...

अगर इस पेज से संबंधित आपके कोई सवाल हैं, या आप इस पेज के लिए अपना रचनात्मक सहयोग करना चाहते हैं, तो हमें ईमेल करें या पत्र लिखें। ईमेल : oped@in.patrika.com
पता : 606, कॉरपोरेट पार्क, सेक्टर 142, नोएडा, उत्तरप्रदेश